प्रारंभिक परीक्षा

विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2024

संदर्भ

स्विस वायु गुणवत्ता ट्रैकिंग कंपनी IQAir द्वारा जारी 2024 विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट, दुनिया भर में वायु प्रदूषण के गंभीर स्तर पर प्रकाश डालती है।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष -

- **सर्वाधिक प्रदूषित राजधानी शहर:**
  - **नई दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी बनी हुई है, जहाँ वार्षिक PM 2.5 सांद्रता 91.8 µg/m³ है।**
  - अन्य प्रदूषित राजधानी शहर: एन'जामेना (चाड) और ढाका (बांग्लादेश)।
  - नई दिल्ली 2018 से 2024 के बीच हर साल सूची में शीर्ष पर रही है, सिवाय 2022 के, जब एन'जामेना ने इसे पीछे छोड़ दिया।
- **विश्व का सर्वाधिक प्रदूषित महानगरीय क्षेत्र:**
  - **बर्नीहाट (मेघालय, भारत) विश्व स्तर पर सबसे प्रदूषित महानगरीय क्षेत्र है**, जिसका वार्षिक PM 2.5 सान्द्रण 128.2 µg/m³ है।
- **सबसे प्रदूषित देश:** (1) चाड (2) बांग्लादेश (3) पाकिस्तान (4) कांगो **(5) भारत।**

प्रदूषण मानक और विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशानिर्देश -

- **डब्ल्यूएचओ PM 2.5 दिशानिर्देश: 5 µg/m³**
  - **µg/m3** माप की एक इकाई है जो माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर को दर्शाती है।
  - इसका उपयोग वायु या अन्य गैसों में प्रदूषकों या कणिकीय पदार्थों की सांद्रता को मापने के लिए किया जाता है।
- **भारत के केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की सीमा: 40 µg/m³**
- **भारत का वास्तविक PM 2.5 स्तर (50.6 µg/m³) विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशानिर्देश से 10 गुना अधिक है।**

- **क्षेत्रीय प्रदूषण विश्लेषण:**
  - **ओशिनिया** सबसे स्वच्छ क्षेत्र है, जिसके 57% शहर डब्ल्यूएचओ के दिशा-निर्देशों को पूरा करते हैं।
  - **सात देश PM2.5 के स्तर के लिए डब्ल्यूएचओ के दिशा-निर्देशों को पूरा करते हैं:** ऑस्ट्रेलिया, बहामास, बारबाडोस, एस्टोनिया, ग्रेनेडा, आइसलैंड और न्यूजीलैंड।
  - **पूर्वी एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया या पश्चिम एशिया का कोई भी शहर डब्ल्यूएचओ के दिशा-निर्देशों को पूरा नहीं करता है।**

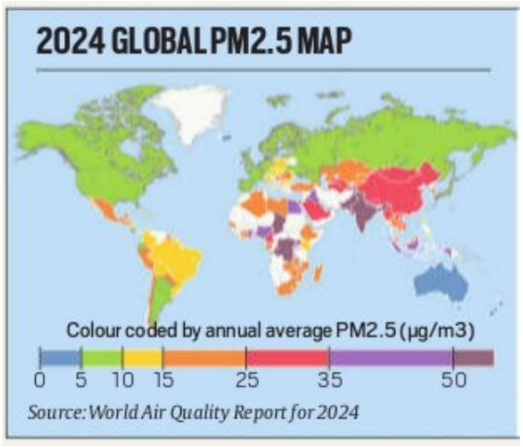

- **वैश्विक प्रदूषण अवलोकन:**
  - दुनिया भर के केवल 17% शहर ही WHO के वायु प्रदूषण संबंधी दिशा-निर्देशों को पूरा करते हैं।
  - 138 देशों में से 126 (91.3%) देश WHO के वार्षिक PM 2.5 दिशा-निर्देशों को पार कर गए।

- मध्य और दक्षिण एशिया दुनिया के शीर्ष सात सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हैं।
- अमेरिका का सबसे प्रदूषित प्रमुख शहर: लॉस एंजिल्स।

भारत का प्रदूषण संकट:

- **भारत 5वें सबसे प्रदूषित देश के रूप में रैंक करता है, जिसका औसत PM 2.5 स्तर 50.6 µg/m^3 है।**
- **2023 में, भारत तीसरा सबसे प्रदूषित देश था।**
- भारत में 2023 (54.4 **µg/m^3**) की तुलना में 2024 (50.6 **µg/m^3**) में **PM** 2.5 के स्तर में 7% की गिरावट देखी गई, लेकिन फिर भी यह अत्यधिक प्रदूषित बना हुआ है।
- दुनिया के 10 सबसे प्रदूषित शहरों में से छह भारत में हैं।
- दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 13 भारत में हैं।
- सबसे प्रदूषित भारतीय शहर (वार्षिक **PM** 2.5 स्तर): बर्नीहाट, मुल्लांपुर (पंजाब), फरीदाबाद, लोनी और गुड़गांव।
- **PM2.5 प्रदूषण के प्रमुख स्रोत:**
  - फसल अवशेष जलाना (पीक अवधि के दौरान प्रदूषण का 60% हिस्सा)।
  - वाहनों से निकलने वाला उत्सर्जन, औद्योगिक उत्सर्जन और निर्माण धूल।
- **PM2.5 प्रदूषण के स्वास्थ्य पर प्रभाव:** श्वसन संबंधी रोग, क्रोनिक किडनी रोग, कैंसर, स्ट्रोक और दिल के दौरे आदि।
  - **भारत में प्रदूषण के कारण जीवन प्रत्याशा लगभग 5 वर्ष कम हो जाती है।**

स्रोत: **Indian Express - Delhi's air worst among capitals**

बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी

संदर्भ

हाल ही में **बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी** ने क्वेटा से पेशावर जाने वाली **यात्री ट्रेन जाफर एक्सप्रेस पर बड़ा हमला किया।**

बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (BLA) के बारे में -

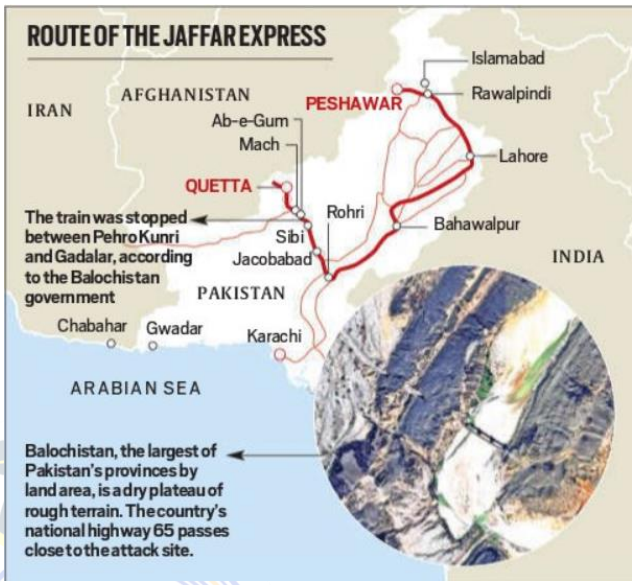

- **BLA एक बलूच राष्ट्रवादी उग्रवादी समूह है जो 2000 के दशक के प्रारंभ से पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में सक्रिय है।**
- यह बलूच स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले सबसे प्रमुख अलगाववादी समूहों में से एक है।
- **इसे पाकिस्तान, ब्रिटेन और अमेरिका द्वारा आतंकवादी संगठन घोषित किया गया है।**
- **BLA पाकिस्तान से अलग एक स्वतंत्र बलूचिस्तान की स्थापना करना चाहता है।**
- बलूच विद्रोही चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) का विरोध करते हैं और दावा करते हैं कि यह बलूच लोगों को लाभ पहुंचाए बिना स्थानीय संसाधनों का दोहन करता है।

बलूचिस्तान: पाकिस्तान का सबसे बड़ा लेकिन सबसे कम विकसित प्रांत -

- **बलूचिस्तान क्षेत्रफल के हिसाब से पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है, लेकिन इसकी जनसंख्या घनत्व कम है।**
- **यह प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है:** तेल, गैस, सोना और तांबा।
- **आर्थिक असमानता**: संसाधन संपन्नता के बावजूद, बलूचिस्तान पंजाब, सिंध और खैबर पख्तूनख्वा की तुलना में आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है।
- पंजाबियों का सैन्य, नौकरशाही और उद्योगों पर दबदबा है, जिससे बलूच लोगों में जातीय असंतोष है।

बलूच अलगाववाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -

- **मार्च 1948 तक बलूचिस्तान पाकिस्तान से स्वतंत्र रहा।**
- **कलात के खान**, एक प्रमुख क्षेत्रीय नेता, कलात, मकरान, लास बेला और खरान को नियंत्रित करते थे।
- उन्होंने शुरू में बलूचिस्तान के लिए स्वतंत्रता की मांग की, लेकिन पाकिस्तान में शामिल होने के लिए राजनीतिक दबाव का सामना करना पड़ा।
- ब्रिटिश भू-राजनीतिक चिंताओं (रूसी प्रभाव का डर) और खरान, लास बेला और मकरान की आंतरिक मांगों ने बलूचिस्तान के विलय में योगदान दिया।
- तब से बलूच अलगाववादी आंदोलन जारी है।

स्रोत: **Indian Express - BLA**

फिलीपींस के पूर्व राष्ट्रपति ICC वारंट पर गिरफ्तार

संदर्भ

फिलीपींस के पूर्व राष्ट्रपति रोड्रिगो दुतेर्ते को हाल ही में गिरफ्तार किया गया, उनके द्वारा ड्रग्स के खिलाफ युद्ध के दौरान मानवता के खिलाफ कथित अपराध करने के लिए **अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) द्वारा गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया था।**

अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) के बारे में -

- **ICC एक स्थायी न्यायिक संस्था है जिसकी स्थापना 1998 के रोम संविधि के तहत 2002 में की गई थी।**
    - इसका **मुख्यालय हेग, नीदरलैंड में** है।
- **कार्य:** नरसंहार, युद्ध अपराध, मानवता के विरुद्ध अपराध और आक्रामकता के अपराध के आरोपी व्यक्तियों की जांच करना, उन पर मुकदमा चलाना और न्यायनिर्णय देना।
- **सदस्य: 125 (महत्वपूर्ण गैर-सदस्य देश: भारत, अमेरिका, चीन और रूस)**
- **संरचना:** न्यायालय में **18 न्यायाधीश** होते हैं, प्रत्येक न्यायाधीश अलग-अलग सदस्य देश से होते हैं, तथा उनका चुनाव **नौ वर्ष के कार्यकाल के लिए होता है**।
- **क्षेत्राधिकार:**
    - रोम संविधि पर हस्ताक्षर करने वाले राज्यों में किए गए अपराध।
    - हस्ताक्षर करने वाले राज्यों के नागरिकों द्वारा किए गए अपराध।
    - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा संदर्भित मामले।
- **गिरफ्तारी वारंट जारी करने के बाद ICC गिरफ्तारी करने तथा संदिग्धों को ICC को सौंपने के लिए देशों पर निर्भर रहती है।**
- **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) के विपरीत ICC संयुक्त राष्ट्र का अंग नहीं है।**
- **प्रवर्तन में चुनौतियाँ:**
    - **अपना कोई पुलिस बल नहीं है।**
    - संदिग्धों की गिरफ्तारी के लिए सदस्य देशों पर निर्भर रहना पड़ता है।
    - प्रवर्तन, संपत्ति जब्त करने और प्रत्यर्पण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है।

स्रोत: **Indian Express - ICC**

लाई डिटेक्टर टेस्ट (पॉलीग्राफ) कैसे काम करता है

संदर्भ

मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (EOW) ने मुख्य आरोपी और न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक के पूर्व महाप्रबंधक हितेश मेहता का पॉलीग्राफ टेस्ट कराया।

पॉलीग्राफ का कार्य सिद्धांत -

- **पॉलीग्राफ शारीरिक क्रियाओं में होने वाले परिवर्तनों को रिकॉर्ड करता है, जो झूठ बोलने पर भावनात्मक प्रतिक्रिया के कारण होने का अनुमान है।**
- **मापे जाने वाले प्रमुख मापदंडों में शामिल हैं**: रक्तचाप, हृदय की धड़कन (पल्स रेट), श्वसन (सांस लेने की दर), पसीना (पसीने का स्तर, जिसे इलेक्ट्रोडर्मल प्रतिक्रिया या साइकोगैल्वेनिक त्वचा प्रतिवर्त भी कहा जाता है) और शरीर में विद्युत आवेग।
- **आधुनिक पॉलीग्राफ का आविष्कार 1921 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक मेडिकल छात्र जॉन लार्सन ने एक पुलिस अधिकारी के सहयोग से किया था।**
- **पॉलीग्राफ टेस्ट में प्रयुक्त उपकरण:**
    - **न्यूमोग्राफ ट्यूब** - सांस लेने की दर मापने के लिए छाती के चारों ओर लपेटा जाता है।
    - **ब्लड प्रेशर-पल्स कफ** - नाड़ी और रक्तचाप में परिवर्तन को ट्रैक करने के लिए हाथ पर बांधा जाता है।
    - **इलेक्ट्रोड -** शरीर के विभिन्न भागों से विद्युत आवेगों को ग्रहण करते हैं।
    - **मूविंग ग्राफ पेपर** - जब व्यक्ति प्रश्नों का उत्तर देता है तो शारीरिक कार्यों में परिवर्तन रिकॉर्ड करता है।

पॉलीग्राफ झूठ का पता कैसे लगाता है -

- परीक्षक व्यक्ति से कई प्रश्न पूछता है।
- जब तटस्थ प्रश्न पूछे जाते हैं तो पॉलीग्राफ आधारभूत शारीरिक प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड करता है।
- जब कोई व्यक्ति झूठ बोलता है, तो एक या अधिक शारीरिक कार्य सामान्य से विचलित हो जाते हैं, जिससे रिकॉर्ड किए गए ग्राफ में परिवर्तन होता है।
- परीक्षक इन विचलनों का विश्लेषण करके यह अनुमान लगाता है कि व्यक्ति झूठ बोल रहा है या नहीं।

पॉलीग्राफ की सटीकता और विश्वसनीयता -

- **पूछताछ में व्यापक रूप से उपयोग किए जाने के बावजूद, पॉलीग्राफ झूठ का सटीक पता लगाने के लिए वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं हैं।**
- कई शोधकर्ता तर्क देते हैं कि शारीरिक प्रतिक्रियाएँ झूठ बोलने के अलावा अन्य कारकों से भी प्रभावित हो सकती हैं, जैसे तनाव, चिंता या घबराहट।
- **पॉलीग्राफ को उनकी अविश्वसनीयता के कारण न्यायालयों में निर्णायक साक्ष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है।**
- कुछ व्यक्ति अपनी शारीरिक प्रतिक्रियाओं में हेरफेर करने के लिए खुद को प्रशिक्षित कर सकते हैं, जिससे पॉलीग्राफ को धोखा देना आसान हो जाता है।

भारत में पॉलीग्राफ टेस्ट की कानूनी स्वीकार्यता -

- **भारत के सर्वोच्च न्यायालय सेल्वी एवं अन्य बनाम कर्नाटक राज्य एवं अन्य (2010) ने फैसला सुनाया कि किसी भी व्यक्ति पर पॉलीग्राफ टेस्ट के लिए दबाव नहीं बनाया जा सकता।**
- न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह के परीक्षण मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हैं, जिसमें **संविधान के अनुच्छेद-20(3)** के तहत आत्म-दोषी ठहराए जाने के विरुद्ध अधिकार भी शामिल है।
- **फैसले के मुख्य कानूनी बिंदु:**
    - **पॉलीग्राफ टेस्ट के नतीजों को इकबालिया बयान नहीं माना जाता है।**
    - टेस्ट के दौरान दिए गए बयानों को प्रत्यक्ष साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।
    - हालांकि, इन परीक्षणों के परिणामस्वरूप मिले साक्ष्य स्वीकार्य हो सकते हैं।
    - **उदाहरण**: यदि आरोपी टेस्ट के दौरान हत्या के हथियार का स्थान बताता है, तो हथियार को ही सबूत के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन स्थान का खुलासा करने वाले बयान को सबूत के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

स्रोत: **The Hindu - Lie Detectors**

नई हरित विद्युत-रासायनिक प्रक्रिया मूत्र को प्लांट फ्यूल में परिवर्तित करती है

संदर्भ

वैज्ञानिकों ने **मूत्र से यूरिया निकालने** और उसे **परकार्बामाइड (एक उपयोगी उर्वरक) में बदलने की एक नई पर्यावरण-अनुकूल विधि विकसित की है।**

मूत्र: कृषि के लिए 'तरल सोना' -

- **17वीं शताब्दी में, जर्मन कीमियागर हेनिग ब्रांड ने मूत्र से सोना निकालने का प्रयास किया। हालांकि असफल रहे, उन्होंने पौधों के लिए एक आवश्यक पोषक तत्व फॉस्फोरस की खोज की।**
- **मूत्र** को अक्सर **"तरल सोना"** कहा जाता है क्योंकि इसमें **फॉस्फोरस, पोटेशियम और नाइट्रोजन (यूरिया के रूप में) की उच्च मात्रा होती है** - उर्वरकों में तीन प्रमुख पोषक तत्व।
- **मूत्र की पोषक संरचना:**
    - एक वयस्क व्यक्ति सालाना 450-680 लीटर मूत्र का उत्पादन करता है।
    - मूत्र में 95% पानी होता है, लेकिन शेष 5% में मूल्यवान पोषक तत्व होते हैं: 4 किलोग्राम नाइट्रोजन और 0.3 किलोग्राम फॉस्फोरस
    - यह पोषक तत्व सामग्री एक साल तक हर दिन एक रोटी के लिए गेहूं उगाने के लिए पर्याप्त है।
- **मूत्र को सीधे उपयोग करने में चुनौतियाँ:** पोषक तत्वों से भरपूर होने के बावजूद, मूत्र रासायनिक रूप से जटिल है, और इसके लवण प्रत्यक्ष यूरिया निष्कर्षण में बाधा डालते हैं।

यूरिया निकालने की नई विद्युत-रासायनिक प्रक्रिया -

- **शोधकर्ताओं की एक टीम ने यूरिया को परकार्बामाइड के रूप में निकालने के लिए ग्रेफाइटिक कार्बन-आधारित उत्प्रेरक का उपयोग करके एक कम ऊर्जा वाली, विद्युत रासायनिक विधि विकसित की है।**
- **मुख्य प्रतिक्रिया**: यूरिया हाइड्रोजन पेरोक्साइड के साथ मिलकर परकार्बामाइड बनाता है, जो एक सफ़ेद क्रिस्टलीय ठोस पदार्थ है जिसे मूत्र से अलग किया जा सकता है।
- **यह प्रक्रिया लगभग 100% कुशल है और मानव और पशु मूत्र दोनों के लिए काम करती है।**
- **परकार्बामाइड के प्रमुख लाभ:**
    - **धीमी गति से नाइट्रोजन मुक्त करने वाला उर्वरक:** यह नाइट्रोजन को धीरे-धीरे मुक्त करके पौधों के पोषण में सुधार करता है।
    - **जड़ श्वसन को बढ़ावा देता है:** पौधों की वृद्धि को बढ़ाता है।
    - **ऑक्सीजन आपूर्तिकर्ता के रूप में कार्य करता है:** सक्रिय ऑक्सीजन की आवश्यकता वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं में उपयोगी।
    - **मूत्र से यूरिया को कुशलतापूर्वक निकालने में मदद करता है।**
- **खोज का महत्व:**
    - कचरे को फेंकने के बजाय उसे मूल्यवान संसाधन में बदलना।
    - सिंथेटिक उर्वरकों की आवश्यकता को कम करके कृषि को अधिक टिकाऊ बनाता है।
    - अतिरिक्त नाइट्रोजन को हटाकर अपशिष्ट जल उपचार में सुधार करता है।

स्रोत: **The Hindu - Liquid Gold**

पर्वतमाला: राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम

संदर्भ

आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (CCEA) ने **पर्वतमाला परियोजना** के तहत **उत्तराखंड में दो प्रमुख रोपवे परियोजनाओं को मंजूरी** दे दी है: **गोविंदघाट-हेमकुंड साहिब रोपवे(12.4 किमी) और सोनप्रयाग-केदारनाथ रोपवे(12.9 किमी)।**

पर्वतमाला कार्यक्रम के बारे में -

- **यह पहाड़ी और भीड़भाड़ वाले शहरी क्षेत्रों में रोपवे बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए एक सरकारी पहल है।**
- इसे सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) द्वारा केंद्रीय बजट 2022-23 में लॉन्च किया गया था।
- **कार्यान्वयन एजेंसी:** MoRTH के तहत राष्ट्रीय राजमार्ग रसद प्रबंधन लिमिटेड (NHLML)।
- **उद्देश्य:**
  - पहाड़ी क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों में वैकल्पिक परिवहन मोड के रूप में रोपवे विकसित करना।
  - पर्यटन, तीर्थयात्रा और दूरदराज के क्षेत्रों के लिए कनेक्टिविटी में सुधार करना।
  - यात्रा के समय और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना।
  - स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना।

पर्वतमाला कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएं -

- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल:**
  - ये परियोजनाएं सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से क्रियान्वित की जाएंगी, जिसमें भारत सरकार लगभग 60% योगदान देगी।
- **स्वदेशी घटक की आवश्यकता:**
  - रोपवे के कम से कम 50% घटकों का निर्माण भारत में किया जाना चाहिए, जो 'मेक इन इंडिया' के अनुरूप होना चाहिए।
- **पर्यावरणीय स्थिरता:**
  - पारंपरिक सड़क परिवहन की तुलना में रोपवे का भूमि और पारिस्थितिक प्रभाव न्यूनतम है तथा उत्सर्जन भी कम है।
- **कवरेज एवं दायरा:**
  - **पांच वर्षों में 1,200 किलोमीटर तक 250 से अधिक रोपवे परियोजनाएं विकसित करने की योजना है।**
  - **फोकस क्षेत्र:** हिमालयी राज्य (उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, आदि) और भीड़भाड़ वाले शहरी केंद्र

स्रोत: PIB - Parvatmala

आयकर विधेयक, 2025 – तलाशी और जब्ती प्रावधान

संदर्भ

आयकर विधेयक, 2025 में कर अधिकारियों की तलाशी और जब्ती शक्तियों के संबंध में एक विवादास्पद प्रावधान पेश किया गया है।

तलाशी और जब्ती प्रावधानों में परिवर्तन -

- **वर्चुअल डिजिटल स्पेस तक विस्तारित शक्तियां:**
  - नया विधेयक किसी व्यक्ति के डिजिटल संचार या खातों की सुरक्षा के लिए किसी भी एक्सेस कोड (पासवर्ड, पासकोड, एन्क्रिप्शन कुंजी) को ओवरराइड करने की शक्ति देता है।
- **आयकर अधिनियम, 1961 के तहत मौजूदा शक्तियां:**
  - कर अधिकारी किसी परिसर में प्रवेश कर उसकी तलाशी ले सकते हैं तथा वित्तीय अभिलेखों को जब्त करने के लिए जबरन ताले खोल सकते हैं।
  - अधिकारी पहले से ही ईमेल, हार्ड डिस्क और डेस्कटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड की जांच कर रहे थे।
- **प्रस्तावित आयकर विधेयक, 2025 के अंतर्गत नई शक्तियां:** अधिकारी अब **"वर्चुअल डिजिटल स्पेस" तक पहुंच सकते हैं** जैसे:
  - ईमेल सर्वर, सोशल मीडिया अकाउंट (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, आदि)
  - ऑनलाइन बैंकिंग और निवेश खाते
  - संपत्ति स्वामित्व विवरण संग्रहीत करने वाली वेबसाइटें
  - क्लाउड स्टोरेज और रिमोट सर्वर, डिजिटल एप्लिकेशन प्लेटफॉर्म, कोई अन्य समान डिजिटल स्पेस।
- **इसका अर्थ यह है कि कर अधिकारी पासवर्ड तोड़ने वाले सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकते हैं या तकनीकी कम्पनियों (जैसे, एप्पल, गूगल, मेटा) से लॉगइन क्रेडेंशियल को बायपास करने का अनुरोध कर सकते हैं।**

नये आयकर विधेयक का मुख्य प्रावधान -

- **'कर वर्ष' अवधारणा का परिचय:**
  - **'मूल्यांकन वर्ष' हटा दिया गया है, और 'कर वर्ष' अब वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल - 31 मार्च) के साथ संरेखित है।**
  - व्यवसायों या नव स्थापित व्यवसायों के लिए, कर वर्ष उनकी स्थापना तिथि से शुरू होता है।
- **आय की विस्तारित परिभाषा:**
  - क्रिप्टोकरेंसी और एनएफटी जैसी वर्चुअल डिजिटल परिसंपत्तियों (वीडीए) को अब भूमि और शेयरों के समान पूंजीगत परिसंपत्ति माना जाता है, जो कर गणना को प्रभावित करती हैं।
- **सरलीकृत एवं संक्षिप्त प्रारूपण:**
  - विधेयक में प्रावधानों और प्रति-संदर्भों की संख्या कम कर दी गई है, जिससे कई धाराओं और नियमों पर निर्भर हुए बिना व्याख्या करना आसान हो गया है।
- **कर अनुपालन आवश्यकताओं का समेकन**
  - टीडीएस, मूल्यांकन समयसीमा, विवाद समाधान और कटौती से संबंधित प्रावधानों को आसान पहुंच के लिए सारणीबद्ध किया गया है।
- **पुरानी छूटों को हटाना:**
  - धारा-54E (1992 से पूर्व परिसंपत्ति हस्तांतरण के लिए पूंजीगत लाभ छूट) जैसे प्रावधान तथा पिछले संशोधनों से अनावश्यक धाराओं को समाप्त कर दिया गया है।
- **वेतन से विस्तृत कटौती**:
  - मानक कटौतियाँ, ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण सहित वेतन से संबंधित कटौतियाँ अब सारणीबद्ध रूप में दी गई हैं, जिससे करदाताओं को स्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

स्रोत: **Indian Express - New IT Bill**

समाचार संक्षेप में

75/25 पहल

- **इसे केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा विश्व उच्च रक्तचाप दिवस (17 मई, 2023) पर लॉन्च किया गया।**
- **इसका उद्देश्य दिसंबर 2025 तक उच्च रक्तचाप और मधुमेह से पीड़ित 75 मिलियन लोगों को मानकीकृत देखभाल प्रदान करना है।**
- **उद्देश्य:**
    - भारत में गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के बढ़ते बोझ को संबोधित करना।
    - 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए समय पर जांच, निदान और उपचार सुनिश्चित करना।
    - प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में सुधार करना।
- **उच्च रक्तचाप और मधुमेह भारत में दो सबसे प्रचलित गैर-संचारी रोग हैं।**
    - **अन्य प्रमुख एनसीडी में शामिल हैं**: मौखिक कैंसर, स्तन कैंसर, गर्भाशय ग्रीवा कैंसर।
- **अब तक की प्रगति:**
    - 42.01 मिलियन लोगों का उच्च रक्तचाप के लिए उपचार किया गया।
    - 25.27 मिलियन लोगों का मधुमेह के लिए उपचार किया गया।
    - **कुल उपलब्धि:** लक्ष्य का 89.7% (75 मिलियन)।

स्रोत: **PIB - 75/25**

संपादकीय सारांश

भारत के व्यापार क्षेत्र में भ्रष्टाचार और अनुपालन चुनौतियाँ

संदर्भ

हाल ही में हुए **"भारत व्यापार भ्रष्टाचार सर्वेक्षण 2024"** में 66% व्यापारिक संस्थाओं ने रिश्वत देने की बात स्वीकार की है, जिनमें से 54% ने कहा कि उन्हें सरकारी प्रक्रियाओं में तेजी लाने, परमिट प्राप्त करने, अनुपालन सुनिश्चित करने या डुप्लिकेट लाइसेंस प्राप्त करने के लिए रिश्वत देने को मजबूर किया गया था।

सरकार द्वारा शुरू किए गए अनुपालन सुधार -

- **जन विश्वास (प्रावधानों में संशोधन) अधिनियम, 2023:** कारावास संबंधी 180 प्रावधानों को अपराधमुक्त कर दिया गया, जो व्यवसायों और उद्यमियों के लिए बोझिल थे।
    - इसका उद्देश्य कानूनी जटिलताओं को कम करके व्यापार करने में आसानी लाना है।
- **जन विश्वास 2.0 (बजट 2025 में घोषित):** लगभग 100 अतिरिक्त प्रावधानों को अपराधमुक्त करने का प्रस्ताव।
    - इसका उद्देश्य व्यावसायिक अनुपालन को सुव्यवस्थित करना और विनियामक घर्षण को कम करना है।
- **श्रम संहिता सुधार: 29 औपनिवेशिक युग के श्रम कानूनों को 4 श्रम संहिताओं में समेकित किया** गया (मजदूरी संहिता, औद्योगिक संबंध संहिता, व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता, और सामाजिक सुरक्षा संहिता - अभी तक लागू नहीं हुई)।
    - इसका उद्देश्य श्रम विनियमों को सरल एवं आधुनिक बनाना है।
- **डिजिटलीकरण प्रयास:** विनियामक अनुमोदन को सरल बनाने के लिए सत्यापित दस्तावेज़ भंडारण हेतु **डिजी लॉकर की शुरूआत।**
    - एकाधिक पहचानकर्ताओं की आवश्यकता को कम करने और अनुपालन दक्षता में सुधार करने के लिए 'एक राष्ट्र, एक व्यवसाय' पहचान प्रणाली का प्रस्ताव रखा गया।

मुद्दे और चुनौतियाँ -

- **लगातार लालफीताशाही और रिश्वतखोरी:** नियामक अधिकारी रिश्वत वसूलने के लिए अनुपालन प्रावधानों का दुरुपयोग करते हैं।
- **जटिल एवं लगातार विनियामक परिवर्तन:** पिछले वर्ष 9,420 से अधिक अनुपालन अद्यतन (~36 दैनिक)।
    - इससे भ्रम की स्थिति पैदा होती है, अनुपालन लागत बढ़ती है, तथा भ्रष्टाचार के अवसर बढ़ते हैं।
- **श्रम सुधारों में कार्यान्वयन अंतराल:** 29 श्रम कानूनों को 4 श्रम संहिताओं में समेकित करने के बावजूद, उनका कार्यान्वयन नहीं हो पाया है।
    - राज्य स्तर पर अपनाने में देरी से सुधारों की प्रभावशीलता कम हो जाती है।
- **निरीक्षकों में जवाबदेही का अभाव:** निरीक्षकों के पास व्यवसायों को जुर्माना लगाने या बंद करने की धमकी देने के लिए अत्यधिक विवेकाधीन शक्तियां होती हैं।
    - अन्यायपूर्ण कार्रवाई का सामना करने वाले व्यवसायों के लिए कोई स्पष्ट शिकायत निवारण तंत्र नहीं है।
- **खंडित व्यवसाय पहचान प्रणाली:** व्यवसायों को विभिन्न प्राधिकरणों से 23+ पहचानकर्ता (जैसे, पैन, जीएसटीआईएन, सीआईएन) बनाए रखना होगा।
    - समय-समय पर नवीनीकरण और बदलती आवश्यकताएं अकुशलताएं पैदा करती हैं और परिचालन लागत बढ़ाती हैं।

निहितार्थ

- **विदेशी निवेश में बाधा:** EY-FICCI सर्वेक्षण में 80% उत्तरदाताओं का मानना है कि भ्रष्टाचार एफडीआई प्रवाह में बाधा डालता है।
    - वैश्विक निवेश परिदृश्य में प्रतिस्पर्धात्मकता की हानि।
- **व्यवसाय की लागत में वृद्धि:** रिश्वतखोरी और अनौपचारिक भुगतान से व्यवसाय की लागत बढ़ जाती है।
    - व्यवसाय की वृद्धि और लाभप्रदता धीमी हो जाती है।
- **उद्यमशीलता के प्रति विश्वास की हानि:** उद्यमियों को व्यवसाय स्थापित करने और विस्तार करने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।
    - विनियामक अनिश्चितता नवाचार और विस्तार को हतोत्साहित करती है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान:** अमेरिका जैसे देश शासन सुधारों के माध्यम से व्यावसायिक परिचालन को सुव्यवस्थित कर रहे हैं।
    - भारत को अधिक व्यापार-अनुकूल अर्थव्यवस्थाओं के लिए निवेश और प्रतिभा खोने का खतरा है।

क्या किया जाने की जरूरत है -

- **जन विश्वास सुधारों को मजबूत करना:** जन विश्वास 2.0 के तहत गैर-अपराधीकरण को 100 प्रावधानों से आगे विस्तारित करना।
    - सुधारों के कार्यान्वयन के लिए स्पष्ट समयसीमा निर्धारित करना।
- **अनुपालन परिवर्तनों को सीमित करना:** वर्ष में केवल एक बार विनियामक अद्यतन घोषित करने के FSSAI के मॉडल का पालन करना।
    - एक पूर्वानुमानित अनुपालन वातावरण बनाना।
- **डिजिटल-प्रथम दृष्टिकोण:** व्यवसाय पहचानकर्ताओं को एकीकृत करने के लिए **'एक राष्ट्र, एक व्यवसाय' पहचान प्रणाली** लागू करना।
    - डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अनुमोदन को सरल बनाना और प्रशासनिक बोझ को कम करना।
- **नियामक अधिकारियों के लिए जवाबदेही:** निरीक्षकों की विवेकाधीन शक्तियों पर अंकुश लगाने के लिए निरीक्षण तंत्र स्थापित करना।
    - भ्रष्ट आचरण में लिप्त अधिकारियों के लिए दंड का प्रावधान करना।
- **श्रम संहिताओं को लागू करना:** सभी राज्यों में श्रम संहिताओं का त्वरित कार्यान्वयन।
    - श्रम विनियमों में एकरूपता और स्पष्टता सुनिश्चित करना।
- **पारदर्शी एवं निष्पक्ष विनियामक वातावरण:** एकल खिड़की मंजूरी प्रणाली के साथ लाइसेंसिंग प्रक्रिया को सरल बनाना।
    - व्यवसायों को अनुचित उत्पीड़न से बचाने के लिए शिकायत निवारण तंत्र को बेहतर बनाना।

स्रोत: **The Hindu: More signs of overhauling the compliance framework**

5 साल बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था पर कोविड-19 का प्रभाव

संदर्भ

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोविड-19 प्रकोप को महामारी घोषित करने के पांच वर्ष बाद भी वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव महत्वपूर्ण बना हुआ है।

5 साल बाद कोविड-19 महामारी के प्रभाव -

- **ऋण और मुद्रास्फीति:**
  - 2020 से वैश्विक सरकारी ऋण में 12 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई है, जिसमें उभरते बाजारों में बड़ी वृद्धि हुई है।
  - लॉकडाउन के बाद के खर्च, सरकारी प्रोत्साहन और आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के कारण मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई, जो 2022 में चरम पर थी।
  - केंद्रीय बैंकों ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरें बढ़ाईं, लेकिन वित्तीय स्थितियाँ सख्त हो गईं।
  - औसत वैश्विक संप्रभु क्रेडिट स्कोर महामारी-पूर्व स्तरों की तुलना में एक चौथाई कम बना हुआ है, जबकि उभरते बाजारों की रेटिंग आधा कम बनी हुई है।
- **श्रम बाजार और यात्रा में बदलाव:**
  - लाखों नौकरियाँ चली गईं, जिनमें महिलाएँ और गरीब परिवार सबसे ज़्यादा प्रभावित हुए।
  - आतिथ्य और रसद जैसे क्षेत्रों की ओर रोज़गार में बदलाव।
  - महिलाओं की कार्यबल भागीदारी में शुरुआत में गिरावट आई, लेकिन लैंगिक रोज़गार अंतर थोड़ा कम हुआ है।
  - एयरलाइन क्षेत्र को 2020 में 175 बिलियन डॉलर का घाटा हुआ, लेकिन 2025 में रिकॉर्ड 5.2 बिलियन यात्रियों के साथ 36.6 बिलियन डॉलर का शुद्ध लाभ दर्ज करने की उम्मीद है।
  - होटल की कीमतें 2019 के स्तर से ऊपर बनी हुई हैं, खासकर ओशिनिया, उत्तरी अमेरिका, लैटिन अमेरिका और यूरोप में।
  - दूर से काम करने के कारण कार्यालय रिक्तियों की दर रिकॉर्ड-उच्च हो गई है।
- **डिजिटल परिवर्तन:**
  - लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन शॉपिंग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो महामारी के बाद उच्च स्तर पर स्थिर हो गई।
  - यूरोप में भौतिक खुदरा स्थान 2022 से 2023 तक 1% बढ़ा और 2028 तक 2.7% बढ़ने का अनुमान है।
  - महामारी के दौरान डिलीवरी और डिजिटल फर्मों के शेयरों में उछाल आया, जिनमें से कुछ ने दीर्घकालिक लाभ बनाए रखा।
  - खुदरा निवेश में वृद्धि हुई, दिसंबर 2020 में कुल अमेरिकी इक्विटी ट्रेडिंग का 27% खुदरा निवेशकों से आया।
  - खुदरा व्यापार में उछाल के दौरान रॉबिनहुड जैसे प्लेटफ़ॉर्म ने प्रमुखता हासिल की।

स्रोत: **The Hindu: Five years on, the economic impact of COVID-19 pandemic still lingers**

विस्तृत कवरेज

पाम ऑयल की बढ़ती कीमतें

संदर्भ

इंडोनेशिया में बायोडीजल के बढ़ते उपयोग और उत्पादन में स्थिरता के कारण पाम ऑयल की कीमतें बढ़ रही हैं, जिसका असर वैश्विक वनस्पति तेल बाजार और मुद्रास्फीति पर पड़ रहा है।

पाम ऑयल उत्पादन की हालिया स्थिति -

- **धीमी वृद्धि:** सीमित भूमि और पुराने बागानों के कारण पिछले चार वर्षों में वैश्विक उत्पादन वृद्धि सालाना 1% तक धीमी हो गई है।
- **बायोडीजल को बढ़ावा**: इंडोनेशिया ने 2024 में बायोडीजल में पाम ऑयल के अनिवार्य मिश्रण को बढ़ाकर 40% कर दिया, जिससे निर्यात उपलब्धता कम हो गई।
- **वनों की कटाई की चिंताएँ:** इंडोनेशिया और मलेशिया में पर्यावरणीय मुद्दे और भूमि की कमी नए बागानों को सीमित कर रही है।
- **श्रम की कमी:** मलेशिया में श्रमिकों की कमी है, जिससे उत्पादन धीमा हो रहा है।
- **पुराने बागान**: तेल के ताड़ के पेड़ 20 साल बाद उत्पादकता खो देते हैं, लेकिन संक्रमण के दौरान उच्च लागत और उत्पादकता में कमी के कारण पुनःरोपण धीमा है।
- **गैनोडर्मा फंगस:** एक फंगल रोग जो उपज को कम करता है और ताड़ के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

ऑयल पाम(इलाइस गुनीनेसिस) के बारे में -

- **उत्पत्ति**: यह ताड़ परिवार (**एरेकेसी**) से संबंधित एक अफ्रीकी पेड़ से आता है।
- **वैश्विक वितरण**: पश्चिमी और मध्य अफ्रीका की मूल प्रजाति, अब मलेशिया और इंडोनेशिया में व्यापक रूप से खेती की जाती है।
- **पोषण संरचना:** बीटा कैरोटीन, संतृप्त और असंतृप्त वसा और विटामिन ई से भरपूर।
- **स्वास्थ्य लाभ**: विटामिन ए की कमी को रोकने और इलाज के लिए उपयोग किया जाता है।

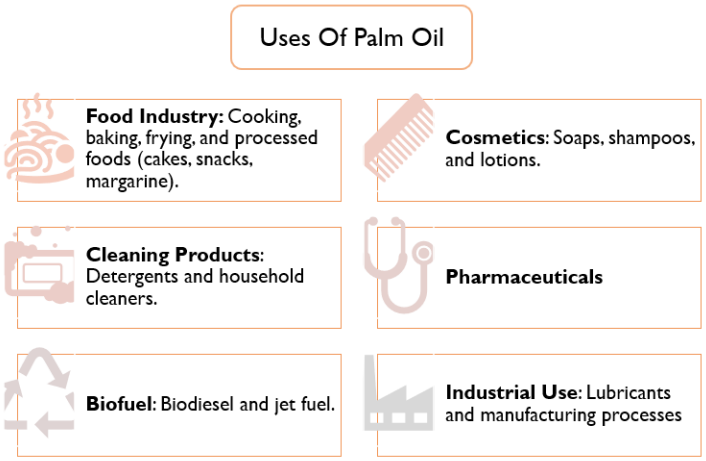

- **वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ:**
    - **जलवायु**: **गर्म और आर्द्र उष्णकटिबंधीय जलवायु (30°C से 32°C के** बीच तापमान) की आवश्यकता होती है।
    - **वर्षा**: वार्षिक वर्षा **250 सेमी से 400 सेमी** तक होती है।
    - **मिट्टी**: **गहरी, अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ दोमट मिट्टी** जिसका पीएच **4.0 से 7.0 के बीच हो**।
    - **ऊँचाई**: कम ऊँचाई, आमतौर पर **500 मीटर से नीचे**।
    - **सूर्य का प्रकाश**: इष्टतम विकास के लिए प्रतिदिन **5-7 घंटे प्रत्यक्ष सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है।**
    - **आर्द्रता**: उच्च आर्द्रता स्तर (**कम से कम 80%**)

पाम ऑयल उत्पादन

- **वैश्विक:**
  - **इंडोनेशिया और मलेशिया वैश्विक पाम ऑयल उत्पादन का लगभग 85% उत्पादन करते हैं।**
    - **इंडोनेशिया सबसे बड़ा निर्यातक है, उसके बाद मलेशिया का स्थान है।**
  - 2024 में वैश्विक पाम ऑयल उत्पादन लगभग 77 मिलियन मीट्रिक टन होने का अनुमान है।
  - **अन्य उत्पादक** - थाईलैंड, नाइजीरिया, कोलंबिया और पापुआ न्यू गिनी भी महत्वपूर्ण उत्पादक हैं।
- **भारत:**
  - भारत सालाना लगभग 0.35 मिलियन मीट्रिक टन पाम ऑयल का उत्पादन करता है।
  - **भारत दुनिया का सबसे बड़ा पाम ऑयल आयातक है, जो सालाना 9 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक आयात करता है, मुख्य रूप से इंडोनेशिया और मलेशिया से।**
  - **प्रमुख उत्पादक राज्य:** आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल।

राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन – पाम ऑयल (NMEO-OP)

- **लॉन्च किया गया**: **2021**
- **उद्देश्य**: पाम ऑयल की खेती के अंतर्गत क्षेत्र का विस्तार करके और उत्पादकता में सुधार करके खाद्य तेल उत्पादन में वृद्धि करना।
- **लक्ष्य**: खाद्य तेल आयात पर भारत की निर्भरता को कम करना।
- **वित्तपोषण पैटर्न**: 80% केंद्र सरकार द्वारा और 20% राज्य सरकारों द्वारा वित्त पोषित।
- **फोकस क्षेत्र**: पूर्वोत्तर भारत और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर विशेष जोर।
- **कार्यान्वयन**: अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा सहित 15 राज्यों में कार्यान्वित किया जा रहा है।
- **प्रमुख विशेषताऐं:**
  - गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री की खरीद के लिए वित्तीय सहायता।
  - 4-वर्षीय गर्भधारण अवधि के दौरान अंतर-फसल लागत के लिए सहायता।
  - वृक्षारोपण के रखरखाव के लिए वित्तीय सहायता।
  - किसानों को न्यूनतम मूल्य सुनिश्चित करने के लिए तंत्र।
  - उन परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता जो आर्थिक रूप से लाभकारी हैं लेकिन वित्तीय रूप से अव्यवहारिक हैं।

पाम ऑयल की खेती से जुड़ी चुनौतियाँ -

- **वनों की कटाई और आवास की क्षति:** पाम ऑयल की खेती उष्णकटिबंधीय वनों की कटाई का एक प्रमुख कारण है, विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया (इंडोनेशिया और मलेशिया) में।
  - 1960 के दशक से अब तक पाम ऑयल के बागानों के कारण बोर्नियो के 60% वन नष्ट हो चुके हैं।
  - वनों की हानि से ओरांगउटान, सुमात्रा गैंडे और बाघ जैसी प्रजातियों पर खतरा मंडरा रहा है, जिससे उनके विलुप्त होने का खतरा बढ़ रहा है।
- **मानव-वन्यजीव संघर्ष:** आवास विनाश के कारण जानवरों को भोजन की तलाश में बागानों में प्रवेश करना पड़ता है।
  - फसलों की रक्षा करने की कोशिश कर रहे बागान श्रमिकों द्वारा अक्सर ओरांगउटान, हाथी और अन्य जानवर मारे जाते हैं या घायल हो जाते हैं।
- **जलवायु परिवर्तन में योगदान:** पाम ऑयल के लिए वनों की कटाई वार्षिक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 2-4% का योगदान देती है।

  - पाम ऑयल के लिए पीटलैंड की सफाई से प्रतिवर्ष लगभग 438 मिलियन टन CO2 उत्सर्जित होती है, जो यूरोपीय संघ के वाहन यातायात से होने वाले उत्सर्जन के बराबर है।
- **जटिल एवं अनियमित आपूर्ति श्रृंखलाएं:** अकेले इंडोनेशिया में 1,500 से अधिक पंजीकृत पाम ऑयल कंपनियां उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं और वितरकों का एक जटिल नेटवर्क बनाती हैं।
  - नेस्ले, पेप्सिको और यूनिलीवर जैसी प्रमुख कंपनियों ने वनों की कटाई नहीं करने, पीट नहीं करने और शोषण नहीं करने (एनडीपीई) की प्रतिबद्धताएं तो जताई हैं, लेकिन उन्हें लागू करने में उन्हें संघर्ष करना पड़ रहा है।
  - अवैध संचालन और कमजोर प्रवर्तन स्थिरता प्रयासों को कमजोर करते हैं।
- **अवैध कटाई और खराब विनियमन:** कमजोर प्रवर्तन और भ्रष्टाचार के कारण अवैध कटाई और वृक्षारोपण जारी है।
  - कॉर्पोरेट प्रतिबद्धताओं के बावजूद, अवैध बागानों से खाद्यान्न प्राप्ति जारी है।
- **उत्पादों में छिपा हुआ उपयोग:** पाम ऑयल रोजमर्रा के उत्पादों (जैसे, भोजन, सौंदर्य प्रसाधन और सफाई की आपूर्ति) में 200 से अधिक व्युत्पन्न रूपों में मौजूद है।
  - पाम ऑयल की व्यापक और छिपी हुई उपस्थिति उपभोक्ता जागरूकता और जवाबदेही को कठिन बना देती है।
- **मृदा क्षरण और जल की कमी:** पाम ऑयल को बड़ी मात्रा में उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता होती है, जिसके कारण मृदा पोषक तत्वों की कमी हो जाती है।
  - इसमें पानी की अधिक आवश्यकता होती है (प्रति पौधे प्रति दिन 250-300 लीटर पानी की आवश्यकता होती है), जिससे स्थानीय जल संसाधनों पर दबाव पड़ता है।
- **मूल निवासियों की भूमि और सामुदायिक अधिकारों की हानि:** बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण से भूमि नियंत्रण मूल निवासियों के समुदायों से निगमों के पास चला जाता है।
  - स्थानीय समुदायों की पारंपरिक भूमि और संसाधनों तक पहुंच समाप्त हो जाती है, जिससे उनकी आजीविका और खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है।

पूर्वोत्तर भारत में पाम ऑयल की खेती के मुद्दे

- **राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन-पाम ऑयल का उद्देश्य भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में पाम ऑयल की खेती का विस्तार करना है।**
- हालाँकि, इस पहल से महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और सांस्कृतिक जोखिम उत्पन्न हो रहे हैं।
- **2004 के बाद से मिजोरम का अनुभव विशेष रूप से समस्याग्रस्त रहा है:**
    - **अनुपयुक्त भूभाग:** पूर्वोत्तर की 90% से अधिक भूमि पहाड़ी है, जो खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के दिशानिर्देशों के अनुसार पाम ऑयल की खेती के लिए अनुपयुक्त है।
        - **पाम ऑयल** ताड़ के बागान मैदानी और तराई वाले क्षेत्रों के लिए अधिक उपयुक्त हैं, न कि खड़ी और ऊबड़-खाबड़ भूमि के लिए।
    - **जल की कमी:** पाम ऑयल एक जल-प्रधान फसल है, जिसे प्रतिदिन प्रति पौधे 250-300 लीटर जल की आवश्यकता होती है।
        - इस क्षेत्र में केवल चार महीने ही वर्षा होती है, जिसके कारण जल की कमी हो जाती है तथा भूजल स्तर गिर जाता है।
    - **मृदा उर्वरता हानि:** पाम ऑयल की खेती के लिए बड़ी मात्रा में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता होती है, जो समय के साथ मिट्टी की गुणवत्ता को ख़राब कर देते हैं।
        - मिजोरम में वृक्षारोपण के कारण मिट्टी की उर्वरता पहले ही कम हो चुकी है, जिससे फसल प्रतिस्थापन कठिन हो गया है।
    - **बुनियादी ढांचे का अभाव:** पाम ऑयल फलों को कटाई के 48 घंटे के भीतर संसाधित करने की आवश्यकता होती है।
        - इस क्षेत्र में पर्याप्त परिवहन और मिलिंग बुनियादी ढांचे का अभाव है, जिसके कारण कटी हुई फसलें सड़ जाती हैं और किसानों को वित्तीय नुकसान उठाना पड़ता है।
    - **खाद्य सुरक्षा को खतरा:** पारंपरिक झूम खेती (काट-और-जलाकर खेती) को हतोत्साहित किया जा रहा है, जिससे खाद्य फसलों और औषधीय पौधों की उपलब्धता प्रभावित हो रही है।
        - भूजल की कमी और प्राकृतिक वनों की क्षति से खाद्य सुरक्षा को और अधिक खतरा हो रहा है।
    - **भूमि स्वामित्व में बदलाव:** तेल पाम की खेती से भूमि नियंत्रण स्थानीय समुदायों से निजी कंपनियों के पास स्थानांतरित हो जाता है।
        - ग्राम पंचायतें और समुदाय आधारित परिषदें भूमि प्रबंधन पर अपनी शक्ति खो देती हैं, जिससे किसान कम्पनियों पर निर्भर हो जाते हैं और शोषण के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।
    - **आजीविका की हानि:** फसल की विफलता और मिट्टी की खराब सेहत के कारण किसानों को वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़ता है।
        - कोई भी स्थायी वैकल्पिक आजीविका उपलब्ध नहीं कराई गई है, जिससे किसान आर्थिक संकट में हैं।

पाम ऑयल की खेती के लिए सतत प्रथाएँ -

- **वनों की कटाई नहीं, पीट नहीं, शोषण नहीं (NDPE) नीतियां**: सुनिश्चित करना कि पाम ऑयल वनों की कटाई, पीटलैंड विनाश या समुदायों के शोषण के बिना उगाया जाता है।
- **अवक्रमित भूमि का उपयोग**: वृक्षारोपण प्राथमिक वनों के बजाय अवक्रमित या पहले से खेती की गई भूमि पर स्थापित किया जाना चाहिए।
- **जल प्रबंधन:**
    - **कुशल जल उपयोग:** जल की खपत को न्यूनतम करने तथा पुनः उपयोग के लिए अपशिष्ट जल को एकत्रित करने के लिए प्रणालियां लागू करना।
    - **जल स्रोतों की सुरक्षा करना:** जल की गुणवत्ता और वन्यजीव आवासों की सुरक्षा के लिए नदी तटीय रिजर्व बनाए रखें।

    - **अपशिष्ट उपयोग:** ताड़ के पत्तों और कटिंगों को गीली घास या खाद के रूप में पुनः उपयोग करना।
- **अनुकूलित उर्वरक उपयोग:** उर्वरता बढ़ाने और रासायनिक निर्भरता को कम करने के लिए मिट्टी परीक्षण के आधार पर जैविक और जैव-उर्वरकों का प्रयोग करना।
- **जैव विविधता संरक्षण**
    - **बहु-फसल**: जैव विविधता को बढ़ाने और किसानों के लिए अतिरिक्त आय के स्रोत उपलब्ध कराने के लिए अन्य पौधों के साथ अंतःफसल उगाना।
    - **वन्यजीव गलियारे**: स्थानीय वन्यजीवों की सहायता के लिए वृक्षारोपण के भीतर गलियारे स्थापित करना।
- **सामुदायिक सहभागिता:** नये वृक्षारोपण की स्थापना से पहले स्थानीय समुदायों से सहमति प्राप्त करना।
- **प्रमाणन और पारदर्शिता**: पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए सतत पाम ऑयल पर गोलमेज सम्मेलन (आरएसपीओ) मानकों का पालन करना।

स्रोत: **The Hindu: End of cheap palm oil? Output stalls with rise of biodiesel**

भारत और मॉरीशस

संदर्भ

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में वहां गए।

भारत और मॉरीशस संबंध -

- **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध**
  - **भारतीय प्रवासी: मॉरीशस की लगभग 70% जनसंख्या भारतीय मूल की है**, जो मुख्यतः अंग्रेजों द्वारा लाए गए गिरमिटिया मजदूरों के वंशज हैं।
  - **फ्रांसीसी और ब्रिटिश शासन:**
    - **फ्रांसीसी शासन (1700 का दशक):** पुडुचेरी से भारतीयों को कारीगरों और राजमिस्त्रियों के रूप में लाया गया था।
    - **ब्रिटिश शासन (1834-1900 के दशक के प्रारंभ में):** लगभग **500,000 भारतीय गिरमिटिया मजदूर** आये; दो-तिहाई मॉरीशस में बस गये।
  - **गांधीजी का प्रभाव: 1901** में महात्मा गांधी की यात्रा ने राजनीतिक जागरूकता और शिक्षा एवं सशक्तिकरण के महत्व को प्रेरित किया।
  - **शिवसागर रामगुलाम:** स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और स्वतंत्र मॉरीशस के पहले प्रधानमंत्री बने; गांधी, नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे भारतीय नेताओं के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे।
- **राजनीतिक और राजनयिक संबंध**
  - **राजनयिक संबंध:** भारत की स्वतंत्रता के बाद **1948** में स्थापित।
  - **चागोस द्वीपसमूह विवाद:** भारत चागोस द्वीपसमूह पर मॉरीशस के क्षेत्रीय दावे का समर्थन करता है।
  - **राजनीतिक प्रभाव:** मॉरीशस पर मुख्य रूप से दो राजनीतिक परिवारों - **रामगुलाम** और **जगन्नाथ** - का शासन रहा है, दोनों ने भारत के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे हैं।
- **आर्थिक एवं व्यापार सहयोग**
  - **सीईसीपीए (व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता):**
    - **2021** में भारत और किसी अफ्रीकी देश के बीच पहला व्यापार समझौता हस्ताक्षरित हुआ।
    - एक दूसरे के बाजारों तक अधिमान्य पहुंच की सुविधा प्रदान करता है।
  - **एफडीआई:**
    - **वित्त वर्ष 2023-24 में सिंगापुर के बाद मॉरीशस भारत में एफडीआई का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है।**
    - **1983** में हस्ताक्षरित **दोहरे कराधान परिहार समझौते (डीटीएए) ने** भारतीय व्यवसायों के लिए निवेश केंद्र के रूप में मॉरीशस की स्थिति को बढ़ावा दिया।
  - **मॉरीशस में भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम:**
    - बैंक ऑफ बड़ौदा, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) और एनबीसीसी मॉरीशस में काम करते हैं।
  - **विकास सहायता:**
    - पिछले दशक में भारत की सहायता = **1.1 बिलियन डॉलर** (729 मिलियन डॉलर ऋण के रूप में और 427 मिलियन डॉलर अनुदान के रूप में)।
    - प्रमुख परियोजनाओं में **मेट्रो एक्सप्रेस** और **96 लघु विकास परियोजनाएं** (51 का उद्घाटन) शामिल हैं।
- **रक्षा एवं समुद्री सुरक्षा**
  - **अगलेगा द्वीप:**

        - **2015 के समझौता ज्ञापन के तहत समुद्री और हवाई संपर्क के लिए बुनियादी ढांचे का विकास किया गया।**
        - ये सुविधाएं मॉरीशस के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) की समुद्री निगरानी और गश्त में सहायता करती हैं।
        - भारत ने **2023 में चक्रवात चिडो** के दौरान सहायता के लिए संसाधन वितरित किए।
    - **व्हाइट शिपिंग समझौता:** भारतीय नौसेना और मॉरीशस के अधिकारियों के बीच वास्तविक समय डेटा साझाकरण को बढ़ाने के लिए इस पर हस्ताक्षर किए जाने की संभावना है।
    - **प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता: भारत ने कोविड-19 महामारी**, **वाकाशियो तेल रिसाव (2020)** और **चक्रवातों** के दौरान तेजी से सहायता प्रदान की है।
- **अंतरिक्ष एवं तकनीकी सहयोग**
    - **2022 में, भारत ने इसरो सहयोग के तहत मॉरीशस को अपना पहला उपग्रह लॉन्च करने में सहायता की।**
    - **मॉरीशस अनुसंधान एवं नवाचार परिषद (एमआरआईसी)** के साथ संयुक्त उपग्रह विकास के लिए **2023** में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
    - **टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और टेलीकमांड (टीटीसी) स्टेशन:** उपग्रह और प्रक्षेपण वाहन निगरानी के लिए **1986 के समझौते** के तहत स्थापित किया गया।
- **क्षमता निर्माण और शिक्षा**
    - **भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटीईसी):**
        - 2002 से अब तक 4,940 से अधिक मॉरीशसवासियों को नागरिक और रक्षा क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया।
        - लगभग 2,300 भारतीय छात्र मॉरीशस में चिकित्सा, व्यवसाय और होटल प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में अध्ययन कर रहे हैं।
    - **सांस्कृतिक संबंध:**
        - महात्मा गांधी संस्थान और भारतीय सांस्कृतिक केंद्र साझा विरासत को बढ़ावा देते हैं।
        - महाशिवरात्रि और गंगा तालाब तीर्थयात्रा मजबूत सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाती है।
- **सामरिक महत्व:**
    - **हिंद महासागर क्षेत्र:** चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए भारत की सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) रणनीति के लिए मॉरीशस महत्वपूर्ण है।
    - **नीली अर्थव्यवस्था:** भारत, समुद्री सुरक्षा और सतत महासागर संसाधन प्रबंधन को मजबूत करने के लिए नीली अर्थव्यवस्था विकसित करने में मॉरीशस को सहयोग दे रहा है।

भारत-मॉरीशस संबंधों में चुनौतियाँ -

- **मॉरीशस से एफडीआई में गिरावट:** डीटीएए के 2016 संशोधन ने भारत के लिए एफडीआई मार्ग के रूप में मॉरीशस की अपील को कम कर दिया।
    - **उदाहरण के लिए**, मॉरीशस से एफडीआई 2016-17 में 15.72 बिलियन डॉलर से घटकर 2022-23 में 6.13 बिलियन डॉलर हो गया, जिससे यह सिंगापुर और अमेरिका के बाद तीसरा सबसे बड़ा एफडीआई स्रोत बन गया।
- **समुद्री एवं सुरक्षा चुनौतियाँ:** हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) को मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध मछली पकड़ने जैसे बढ़ते खतरों का सामना करना पड़ रहा है।
- **बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में देरी:** मॉरीशस में भारत समर्थित परियोजनाओं को नौकरशाही और कार्यान्वयन संबंधी मुद्दों के कारण देरी का सामना करना पड़ रहा है।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत की 500 मिलियन डॉलर की ऋण सुविधा के अंतर्गत मेट्रो एक्सप्रेस परियोजना को शुरू में काफी देरी का सामना करना पड़ा।
- **व्यापार असंतुलन और सीमित विविधीकरण:** भारत का मॉरीशस को निर्यात, मॉरीशस द्वारा भारत को किए जाने वाले निर्यात से काफी अधिक है।
    - **उदाहरण के लिए,** 2023-24 में, मॉरीशस को भारत का निर्यात 778 मिलियन डॉलर था, जबकि मॉरीशस का भारत को निर्यात केवल 73 मिलियन डॉलर था।

- **बढ़ता चीनी प्रभाव:** चीन ने मॉरीशस के सुप्रीम कोर्ट का निर्माण किया और बुनियादी ढांचे के लिए ऋण उपलब्ध कराया, जिससे ऋण निर्भरता की चिंता बढ़ गई।

आगे की राह

- **समुद्री सुरक्षा और सामरिक सहयोग को बढ़ाना:** फ्रांस के समान मॉरीशस के साथ व्हाइट शिपिंग समझौता स्थापित करना।
- **सामरिक कूटनीति के माध्यम से चीन के प्रभाव का मुकाबला करना:** बुनियादी ढांचे के लिए अनुदान, प्रौद्योगिकी साझेदारी और सॉफ्ट पावर पहल को बढ़ाना।
- **दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टि**: भारत-यूएई विजन 2030 और भारत-सिंगापुर स्मार्ट सिटी सहयोग मॉडल का अनुसरण करना।
- **आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना:** एफडीआई को बढ़ावा देने के लिए डीटीएए को संशोधित करना तथा आईटी, फिनटेक और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों को कवर करने के लिए सीईसीपीए का विस्तार करना।
- **सांस्कृतिक एवं प्रवासी जुड़ाव:** महात्मा गांधी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय जैसी संस्थाओं को मजबूत बनाना।
- **नवाचार और कौशल विकास:** युवा और कौशल निर्माण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, तथा मॉरीशस में भारत के यूपीआई मॉडल जैसे फिनटेक और डिजिटल भुगतान एकीकरण को बढ़ावा देना।

स्रोत: **Indian Express: As Prime Minister Modi lands in Mauritius, why the island country matters to India**